M.A. Semester-IV Examination 2015
Hindi (Special Paper)
Paper :XVI
(Tulasidas)

Time : Three Hours **Full Marks : 40**

Questions are of value as indicated in the margin.

1. किन्हीं **दो** की सप्रसंग आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए — 2×8=16

(क) देखि भरत गति अकथ अतीवा। प्रेम मगन मृग खग जड़ जीवा।।
सखहि सनेहु बिबस मग भूला। कहि सुपंथ सुर बरसहिं फूला।।
निरखि सिद्ध साधक अनुरागे। सहज सनेहु सराहन लागे।।
होत न भूतल भाउ भरत को। अचर सचर चर अचर करत को।।
प्रेम अमिय मंदरु बिरहु भरतु पयोधि गंभीर।
मथि प्रगटेउ सुर साधु हित कृपासिंधु रघुबीर।।

(ख) सिव सिव होइ प्रसन्न करु दाया!
करुणामय, उदार कीरति बलि जाऊँ, हरहु निज माया।।
जलज-नयन, गुन अयन, मयन रिपु, महिमा जान न कोई।
बिनु तव कृपा राम पद-पंकज, सपनेहुं भगति न होई।।
ऋषय, सिद्ध, मुनि, मनुज, दनुज, सुर, अपर जीव जग माहीं।
तुव पद विमुख न पार पाव कोउ, कलप कोटि चलि जाहीं।।
अहिभूषन, दूषन-रिपु-सेवक, देव-देव त्रिपुरारी।
मोह-निहार-दिवाकर संकर, सरन सोक-भयहारी।।
गिरिजा-मन-मानस-मराल, कासीस, मसान-निवासी।
तुलसिदास हरि-चरनकमल-वर, देहु भक्ति अविनासी।।

(ग) अपराध अगाध भएँ जनतें, अपने उर आनत नाहिन जू।
गनिका गज, गीध, अजामिलके गनि पातकपुंज सिराहिं न जू।।
लिएँ बारक नामु सुधामु दियो, जेहिं धाम महामुनि जाहिं न जू।
तुलसी! भजु दीनदयालहि रे! रघुनाथ अनाथहि दाहिन जू।।

(घ) सुभग सेज सोभित कौसिल्या रुचिर राम-सिसु गोद लिये।
बार बार बिधुबदन बिलोकति लोचन चारु चकोर किये।।
कबहुँ पौढ़ि पयपान करावति, कबहूँ राखति लाइ हिये।
बालकेलि गावति हलरावति, फुलकति प्रेम-पियूष पिये।।
बिधि-महेस, मुनि-सुर सिहात सब, देखत अंबुद ओट दिये।
तुलसिदास ऐसो सुक रघुपति पै काहू तो पायो न बिये।।

P.P.O.

2. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर दीजिए – 2×12=24

(क) 'रामचरितमानस' के आधार पर चित्रकूट-सभा की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए।

(ख) 'विनयपत्रिका' के काव्य-सौन्दर्य का विवेचन कीजिए।

(ग) 'कवितावली' के उत्तरकांड में चित्रित युग-यथार्थ पर प्रकाश डालिए।

(घ) 'गीतावली' के बाल-वर्णन की विशेषताएँ बताइए।